P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-IX* May -2016

आधुनिक संस्कृत कथा–साहित्य में लोक–संवेदना

मधु सत्यदेव
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर।

सारांश

मानवीय क्रिया–कलापों का स्थूल वर्णन ही नहीं अपितु उसके साथ मनोभावों का सूक्ष्म चित्रण और मानवीय करूणा और संवेदनाओं की मार्मिक प्रस्तुति आधुनिक संस्कृत कथा–साहित्य का विशेष गुण हैं संस्कृत के आधनिक रचनाकारों को भारतीय समाज में व्याप्त विद्रूपताओं से पीड़ा का अनुभव हुआ। किन्तु इस घनीभूत पीड़ा ने मात्र अश्रु बनकर प्रकट होने का लक्ष्य सीमित नहीं रखा अपितु यथार्थ को मानव–पक्ष में परिवर्तित करने में भूमिका निर्वाह का दायित्व भी लिया।

मुख्य शब्द : कथा–साहित्य, लोक–संवेदना, आधुनिक संस्कृत

प्रस्तावना

कथाकारों ने भारत के आम मनुष्यों को रचना का विषय बनाया, उनके मनोभावों का पहचाना और फिर उस आम मनुष्य के भाव, चिन्ता, व्यथा और संघर्ष की अभिव्यक्ति, कथाओं के माध्यम से हुई। अपने प्रयासों में संस्कृत के आधुनिक कथाकारों ने निःसंकोच नवीन शैली को अपनाया। सामान्यतः संस्कृत रचनाकारों को परम्परा के प्रति अति आग्रही माना जाता है। एक सीमा तक यह सत्य भी है लेकिन अपनी समृद्ध परम्परा का पूर्ण सम्मान करते हुए भी संस्कृत रचनाकारों ने नवीनता के प्रति नेत्र बन्द नहीं किये। इसके विपरीत संस्कृत की परम्परा ने उन्हें युग–बोध की शिक्षा भी दी। सहस्र वर्षों का संस्कृत साहित्य उन्हें यह भी शिक्षा देता रहा कि 'अतीत' भी अपने युग में नवीन था। उसने भी कुछ नवीन प्रयोग किये जब वह वर्तमान था। अतः नवीन शैली के माध्यम से मानव संवेदना अधिक प्रभावी रूप से प्रेषित हो रही हो तो निःसंकोच ऐसा किया जाना चाहिए। यह उपयोगी ही नहीं अपितु आवश्यक हो जाता है। यहाँ नवीनता के प्रति अभिराज राजेन्द्र मिश्र का मत उल्लेखनीय है। अर्वाचीन संस्कृत–नवलेखन में 'कथाएँ' लोकप्रिय हो रही है। परन्तु काव्यशास्त्रीय दृष्टि से उनका भी कोई मान्य संविधान नहीं है।

कथा एवं आख्यायिका का जो स्वरूप आचार्य भामह एवं दण्डी ने निर्णीत किया है, उसमे यदि दोनों आचार्यों के वैवादिक–बिन्दु छोड़ भी दिये जाएँ तो भी कलेवर मात्र की दृष्टि से आज की संस्कृत–कहानी (कथानिका) प्राचीन काल की कथा नहीं हो सकती। कथा एवं आख्यायिका दोनों ही क्रमशः लम्बकों एवं तरंगों में तथा उच्छ्वासों एवं निःश्वासों कि विभक्त, भारी भरकम रचनाएँ हैं। आचार्य भामह का कथन है कि कथा अनायक द्वारा ही आख्यात होनी चाहिए और आख्यायिका नायकेतर व्यक्ति (कवि ?) द्वारा। इसका पालन भी दिखता है सर्जनाओं में। कादम्बरी कथा–नायक वैशम्पायन स्वयं अपनी कई जन्मों की आपबीती सुनाता है। दण्डी के दशकमारचरित में नायक भूत सभी राजकुमार क्रमशः अपने–अपने अनुभव सुनाते है। सुबन्धु–प्रणीत वासदत्ता में भी अंशतः इसी शैली का पालन हुआ हैं आख्यायिका में ऐसा नहीं है। हर्षचरित तथा शिवराजविजय आदि में कवि ही वर्णयिता है।

अर्वाचीन संस्कृत कहानी तकनीकी तौर पर 'कथा' नहीं हो सकती। उसके दो कारण–एक तो यह कि अर्वाचीन कहानी कथा के समान दीर्घ तथा लम्बकादि में विभक्त नहीं होती। दूसरा कारण यह है कि वह सदैव 'काल्पनिक' ही नहीं होती। कहानी कभी–कभी आत्मनुभवाश्रित भी होती है और इतिहासश्रित भी। वह वस्तुनिष्ठ भी होतो है, आत्मनिष्ठ भी होती है। कहानी खण्डात्मक नहीं होती है, प्रत्युत एक 'सातत्य' में अनुस्यूत होती है। कभी–कभी उस सातत्य में भी हृदय परिवर्तनात्मक विराम होते हैं (जैसे मदुयज्ञ 'च०च एवं पोतविहगौ कथाओं में) परन्तु वह एक औपचारिक विभाजन मात्र है। सारी की सारी कथा किसी मर्मोद्घाटन से जुड़ी रहती हैं। डा0 राधावल्लभ की कहानी 'नो ममार न जीर्यति' में कुष्ठ रोग जनित सामाजिक उपेक्षा की एक ऐसी ही असन्तुद वेदना उमारी गई है।[1] निष्कर्ष के तौर पर अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने कहा कि ''उपर्युक्त वैशिष्टयों के साथ, अर्वाचीन संस्कृत कथा का लक्षण सहृदयों के समक्ष आना चाहिए।[2] उनके मापदण्ड को उनकी कथाओं ने पूरा किया है। उनके तीन कथा–संग्रह '' इक्षुगन्धा, रांगडा तथा चित्रपर्णी'' आधुनिक संस्कृत लघुकथा

साहित्य की अमूल्य निधि है।

इक्षुगंधा आठ कहानियों का संग्रह है जिसमें पारिवारिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की कहानियाँ है। रांगडा विविध सामाजिक रूढ़ियों की विडम्बनाओं पर प्रहार करती वर्तमान युग की विकृतियों को प्रकाशित करती कोमल भाव–भूमि पर अंकित नौ कहानियों का संग्रह है। चित्रपर्णी विविध परिवेशों में पनपे लेखक के अनुभव व पश्चिम–परिधि से उभरी उसकी चिन्तन–प्रतिक्रिया और जीवन–दृष्टि को प्रतिबिम्बित करती समाज के आदर्श संस्थापन की कल्पना के स्वप्न संजोती छप्पन लघु कथाओं का संग्रह है। इन कहानियों का वर्णन फलक बहुत विशद है। वर्णन चाहे अस्पताल के खाने का हो या वहाँ की नस के ककर्श स्वर का।[3] रेलवे स्टेशन का हो या रेल के डिब्बे में बैठे यात्रियों का, प्रभात–भ्रमण का हो या बाली द्वीप भ्रमण का, प्रत्येक में कथाकार की आत्मानुभूति और पर्यालोचन पाठक को साथ–साथ लेकर चलता प्रतीत होता है।

शैली के सभी स्वरूप अत्यन्त कुशलता के साथ कथा सूत्र में अनुस्यूत किये गये हैं। इक्षुगन्धा की एकहायनी और शतपर्विका में यह विशेष रूप से हृदयावर्जक बना है। बना है।[4] चित्रपर्णी का मकर नामक बैल नयनोर्भाषा लघुकथा के मुख्य पात्र के रूप में है। पशु और मानव के पारस्परिक संवेदन की यह प्रभावोत्पादक कथा है। घायल बैल इसमें स्वामी के सहलाने पर अपना मुख उसकी गोद में रखकर मानो निवेदन करता है कि स्वस्थ होते ही मैं सेवा–निमग्न हो जाऊँगा। पाठक भी पशु–मानव के पारस्परिक संवदेन में सहगामी बन जाते हैं।[5] इसी प्रकार वृद्धामहिषी अत्यन्त संवेदनशील कथा हैं भैंस के बूढ़ी हो जाने पर उसे बेच देने की प्रक्रिया पर अंकुश लगाती यह लघु कथा मूक पशुओं को दादी नानी का स्थान देने का संकेत देती है। वृद्ध सदस्य के समान भैंस भी कुटुम्ब पालिका है उसके बुढ़ापे में भी उसकी सेवा सुश्रुषा अपेक्षित है उसका विक्रय नहीं, यह कथा की मूल संवेदना है।[6] आज भी भारतीय समाज पुत्र मोह से मुक्त नहीं है। ''इक्षुगन्धा'' कथा संग्रह की कथा ''शतपर्विका'' में पुत्र प्राप्ति के मोह में पड़े परिवार वृद्धि करने वाले तथा कन्याओं का अपमान करने वाले एक हृदयहीन पिता की आत्म शुद्धि वर्णित है।[7] अभिराज राजेन्द्र मिश्र जी के कथासंसार का फलक व्यापक है और उसमें गहनता भी है।

डा0 बनमाली विश्वाल तो व्यथा को साहित्य का उत्स मानते है। उनके 24 लघु कथाओं का संकलन बुभुक्षा आधुनिक परिवेश में सहज नूतन शिल्प में लिखे गये जा रहे कथा–साहित्य का प्रतिनिधित्व करता है। बुभुझा शीर्षक कथा में उनकी दृष्टि मंदिर के किनारे भीख माँगते लोगों की ओर गयी है। भूख ही वह कारण है जो उन्हें भीख माँगने पर विवश करती है। मंदिर के किनारे एक अन्धी बालिका और दूसरे पर एक लंगड़ा युवक भीख माँगने पर विवश होते हैं। बालिका को अधिक पैसे मिलते ह। इसलिए वह युवक उसके अन्धेपन का लाभ उठाकर उसके पैसे चुरा लिया करता है। कहानीकार द्वारा पकड़े जाने पर वह उन परिस्थितियों का उल्लेख करता है जिसने उसे यह अपराध करने पर विवश किया है। कहानी का अन्त इस निष्कर्ष से होता है कि – बुभुक्षितः किं न करोति पापम्।[8] इसी प्रकार उत्पीड़न के अन्य धरातलों पर भी कहानीकार की दृष्टि गयी हैं किन्नरः, तमसाछन्ना, दीपावली, वासुदेवस्य जन्मदिनम्, बलिदानम् इत्यादि कथाओं में इनके विविध स्वरूप उभर कर सामने आते हैं। बनमाली विश्वाल के अन्य कथा संग्रह जिजीविषा की कथाओं में नारी पीड़ा के आधुनिक स्वरूप विभिन्न आयामों में उपस्थित है। कथा वंशरक्षा में पुत्र मोह से उत्पन्न घातक परिस्थितियों का प्रवाहमय वर्णन सरल भाषा में है। कहानी अभिनव शिशुपाल में यह दर्शाया गया है कि दहेज से उत्पन्न नवीन परिस्थितियों के फलस्वरूप व्यापार बन चुके विवाह–संस्कार में परस्पर सहयेाग और स्नेह के भाव लुप्त प्राय हो चुके हैं।

शीर्ष कहानी जिजीविषा की नायिका भी 71 वर्षीया वृद्धा सेवती है जो पुत्र और पुत्रवधू की दुर्घटनावश मृत्यु हो जाने के पश्चात् पौत्र–पौत्रियों के भरण–पोषण हेतु ठेला खींचने का श्रम साध्य कार्य करती है। इस कथा में सेवती को अदम्य साहस, उसकी प्रबल इच्छाशक्ति और सर्वोपरि उसकी जिजीविषा ही उसे अपने लक्ष्य में सफल बनाती है। यथार्थ की तपन में क्रमशः और निखरता जीवन स्त्री संघर्ष और उसके साहस की अभिव्यक्ति बनकर उभरता है। आधुनिक संस्कृत के प्रमुख हस्ताक्षर डा0 केशव चन्द दास का लघु कथा संग्रह ऊर्मिचूडा की चालीस कथायें सामाजिक विसंगति तथा मानव शोषण के विविध आयाम प्रस्तुत करती है। शीर्षक कथा ऊर्मिचूडा में मनुष्य के स्वजनों से उठते विश्वास की कथा है जिससे नारी जगत भी प्रभावित हुआ है। इस कहानी की नायिका वृद्धा जैमा देवी है जो अकेले रेल यात्रा कर रही है। वह दंग रह जाती है जब ट्रेन में व्यापार करने वाला कोई व्यापारी उस अपरिचित के भरोसे अपना सामान छोड़कर चला जाता है जबकि वह अपनी पुत्रवधू पर विश्वास नहीं कर पाती थी कि पत्र पाने के बावजूद वह उसे स्टेशन पर उसे लेने आयेगी या नहीं। यद्यपि निर्धारित स्टेशन पर उसकी प्रतीक्षा में बैठी अपनी बहु को देख उसे अपना सिद्धान्त बदलना पड़ा है।[9] आज भी नारी की विवशता का नाम किस तरह उठाया जा रहा है इसे कहानी पन्थाः में दिखाया गया है। कथा नायिका कुमारी होकर भी किसी के अन्तः सत्वा हो जाने से आत्म हत्या करने को विवश हो जाती हैं मधुकर नामक पुरूष की उदारता के कारणवह संकट से मुक्त तो हो जाती है किन्तु मधुकर स्वयं विवाहित था। सावित्री आजीवन उसकी रखैल बनकर रह जाती है। एक बार उसकी बचपन की सखी कामिनी से उसकी भेंट हो जाती हैं कामिनी द्वारा यह पूछने पर कि वह कहाँ रह रही है ? क्या कर रही है ,सावित्री हँस कर कहती है कि नारी के लिए कर्म क्या है और मार्ग क्या है ?[10] वास्तव में सावित्री का कथन आधुनिक कल में नारी की स्थिति की विडम्बना का मार्मिक स्वरूप प्रकट करता है। इसी कथा संग्रह में नारी–जीवन की व्यथा को चित्रित करने वाली एक कहानी वक्रतरम् है। भानुमती नामक स्त्री जिन्दगी भर जगन्नाथ जी के दर्शन करने पुरी जाना चाहती है परन्तु अपने पिता, सास–ससुर, पति तथा बच्चों की मनमानी के कारण वहाँ जा नहीं पाती। पारिवारिक माया के दल–दल में फँसी इस नारी की अभिलाषा कुचल

दी जातो है और उससे यह कहा जाता है कि घर ही उसका महातीर्थ है।[11] इस कथा संग्रह की ''उपधा'' कहानी धन के बल पर अपराधी को सजा से मुक्ति मिलने की घटना के माध्यम से न्याय व्यवस्था पर जो प्रश्न–चिन्ह उठाती ही है साथ ही पतनशील मानव–मूल्यों पर चिन्ता प्रकट भी करती है। कथाकार ने वकील के माध्यम से यह प्रश्न उठाया है कि अपराधी को न्यायालय ने तो मुक्त कर दिया किन्तु क्या उसकी मुक्ति से समस्या का समाधान हो गया ? क्या उसकी अपराध भावना समाप्त हो गयी ? वह किससे मुक्त हुआ है।[12] अन्य कथायें भी किसी न किसी रूप से मानव–समाज की वर्तमान विसंगतियों पर प्रश्न उठाती है।

आधुनिक भारतीय समाज की विसंगतियों का नारी समाज पर पड़ने वाले प्रभाव तथा अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध नारी संघर्ष की अभिव्यक्ति के सन्दर्भ में वीणापणि पाटनी का नाम हमारे समक्ष उभर कर सामने आता है। उनका कथा संग्रह ''अपराजिता'' वस्तुतः नारी के अजेय रूप की गौरव गाथा है। सात कथाओं के इस संकलन में अनेक सामाजिक विद्रूपताएँ उजागर हुई है। अपराजिता की प्रत्येक कथा नारी के आत्मविश्वास को द्विगुणित का आश्वासन देती है जहाँ–जहाँ पदे–पदे लांछना है चरित्र रक्षा का प्रश्न, संघर्ष पूर्ण मार्ग ह एवं निर्धनता का अभिशाप है ऐसे में उसकी जिजीविषा कब तक बनी रहेगी ? यहीं से प्रारम्भ होती वीणापाणि की समाधान दृष्टि।[13]

डा0 प्रमोद भारतीय द्वारा रचित द्वादश कथाओं का संग्रह सहपाठिनी भी महत्वपूर्ण है जिसमें नारी समाज की समस्याओं के विभिन्न आयाम दृष्टिगोचर हैं। अपनी द्वादश कथाओं से समाज की विसंगतियों पर प्रहार करने वाले भारतीय जी निःसन्देह सहृदयों द्वारा प्रशंसनीय है। कृष्णदत्त शर्मा त्रिपाठी के कथासंग्रह शुष्को वृक्षः में आम भारतीय जनमानस की कठिनाइयों का सरल एवं सहज वर्णन करने वाली कहानियाँ हैं। जीर्णः शुष्को वृक्षः, पंजूरस्थः शुकः, नारी, शवयात्रा, रिक्शायानचालकः तथा प्रदूषणम् जैसी कथाओं में शीर्षक के अनुरूप ही आम जन को केन्द्र में रखते हुए आधुनिक भारतीय समाज की प्रस्तुति है। वर्तमान भोगवाद में लिप्त मानव को देखकर ही सम्भवतः केशव चन्द्र दास ने 'शून्यनाभिः' नामक कथा–संग्रह में भोगवाद की विडम्बना प्रस्तुत करने वाली कथाओं को संग्रहित कर लिखा है। इसके माध्यम से कथाकार यह कहना चाहता है कि ''सांसारिक सुख के सीमालंघन से अशांति है।'' दार्शनिक विषय वस्तु होते हुए भी इन कथाओं में कहीं भी दाशनिक बोझ दृष्टिगोचर नहीं होता है।देवर्षि कलानाथ शास्त्री के कथा संग्रह ''कथानक वल्ली'' में पाँच लघु कथाये हैं। इसमें एक कथा 'अस्पृश्यता' में आज भी भारतीय समाज में प्रचलित ऊँच–नीच के चलन पर प्रश्न उठाया गया है। जाति–प्रथा के विरूद्ध कथाकार आधुनिक भारत मे जाति–प्रथा के विरूद्ध कथाकार आधुनिक भारत में सार्थक आधुनिक मूल्यों की स्थापना चाहता है यह पूरे कथानक से स्पष्ट होता है। डा0 नलिनी शुक्ल के दो कथा संग्रहों ''कथा सप्तकम्'' और ''कथाम्बरा'' की कहानियाँ वर्तमान जीवन की समस्याओं और विसंगतियों पर लिखी गयी है। इसके विषय, नैतिक मूल्यों की नयी व्याख्या पढ़कर लगता है कि नारी चेतना का जो प्रवाह पंडिता क्षमाराव की रचना से आधुनिक संस्कृत में आरम्भ हुआ था, वह सतत् प्रक्रिया में। पंडिता क्षमाराव ने 'कथामुक्तावली' की पच्चीस कथाओं में जिन सामाजिक विषयों को उठाया था यहाँ उसका वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विस्तार है।

निष्कर्ष

किमधिकम् – अनवरत चिन्तन एवं लेखन की इस परम्परा में विराम कहाँ ? यह ऐसे मनोभावों की भागीरथी है जो कहीं तो समाज से जुड़े कटु सत्यों को स्वर देती है तो कहाँ प्रश्न छोड़कर मौन हो जाती है। समाज में व्याप्त व्यथाएँ ही कवि की कल्पनाओं में प्रश्रय प्राप्त कर आधुनिक कथाओं का आधार प्रकार ग्रहण करती है। अन्ततः सार संक्षेपणीय तथ्य है कि संस्कृत साहित्य को जन–जन से जोड़ने के लिये यह आवश्यक है कि आधुनिक संस्कृत साहित्य वर्तमान विषयों से जोड़कर लिखा जाये। किन्तु प्राचीन मूल्यों पर दृष्टि रखते हुए भी अर्वाचीन भी उपेक्षा न हो यही इन कथाओं की संवेदना है जो नव्यकथा सर्जकों के लिये ही मानो मुखरित हुई है।

सन्दभ ग्रन्थ सूची

1. दृक अंक 9
2. भावयेत्पाठकान् सद्यो मर्मणा स्वेन या पुनः।
एका सैव कथाऽन्यास्तु वार्ता सन्ति हि केवलम्।।
वही पृ0–23
3. झंझावेगांता सा भगिनीत्युच्यमाना कर्कशा।
रांगडा पृ0–19
4. इक्षुगन्धा, पृ0–31, 37, 42
5. वृषभः स्वप्रोथं पितामहोत्संगे निधाय रोदितुं प्रवृत्तः।
चित्रपर्णी पृ0–28
6. नाऽहं किम्प्यन्तरमपश्यं पितामहीमहिस्योः।
उभेऽपिकुटम्बपालिके। उभेऽपि सम्प्रति श्लथशरीरे
निरूपयोगे च। तथापि उभेऽपि कुटम्बिजन स्नेह
समुदाचार सेवा सहानुभूति मात्र जीविते सम्प्रति।।
चित्रपणी पृ0–38
7. सात कन्याओं के प्रति पिता की कटुभावनायें इस प्रकार चित्रित है–
सप्तसंख्यका इमे जाताः। केन याचिताः ?
मृत्युचीत्कृतम इव नक्तन्दिवं मा परितः
कथमेला क्रीडन्ति ? कथं न मियन्ते ?
किमर्थ सर्वा अक्षता जीवन्ति ?
कथा संग्रह इच्क्षुगन्धा की कथा शतपर्विका
8. बुभुक्षा–वनमाली विश्वाल प0–94मम परिवारः बुभुक्षया म्रियते। तेषाम् आवश्यकतां पूरयितुं न समर्थः अस्मि।
बुभुक्षा पृष्ठ 94
9. सुदीर्घजृम्भायां च नेत्रद्वयं निमीलतिऊर्मिचूडा पृ0 64
10. नारी जीवने किमन्यत् कर्म ?क्व वा पन्थाः ?
उर्मिचूडा, पृ0–42
11. गृहमिदं तु महातीर्थम्। कुत्र गमिष्यामः ? वक्रमिह
सरलतरम्। सरलं च वक्रतरम
वही पृ0–104
12. किं तस्य अपराधस्य विचार समाप्तः ? किं श्यामः: सर्वात्मना मुक्तः वही पृ0–30
13. सबलासि त्वम् नरस्यबलाः नास्येकाकिनी च।तव सहायकस्तव पुत्र अजयो भविष्यति । अहं च शोभना च तब सख्यौं।
बातायनम् पृ0–86